सूरदास एवं तुलसीदास

अध्यात्म की विभूति से मंडित हिन्दी साहित्याकाश दो देदीप्यमान नक्षत्रों से आलोकित रहा है जिनमें सूर तो सूर ही थे और तुलसी को शशि की उपमा से विभूषित किया गया है। इस शब्द के समर्थन में निम्नांकित दो पंक्तियाँ उद्धरण के योग्य हैं:—

सूर सूर तुलसी शशि उडगन केशव दास।
अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करत प्रकाश॥

सूर ने कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन का अपने काव्य में वर्णन नहीं किये बल्कि कृष्ण के दो उभरे पक्षों ने सूर को काव्य लिखने के लिए मजबूर कर दिया - वह था बाललीला और शृंगार।

मुगलकालीन भारतीय जीवन परतन्त्रता की आहों कुसंस्कृति का करुण चित्कार कर रहा था जब ऐसे मार्ग दर्शक सत्य साहित्य स्रष्टा की आवश्यकता थी। गोस्वामी तुलसी दासजी ने अवनति के गर्त में गिरते हुए भारतीय समाज को सम्बल दिया।

बलराम कुमार